भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India

रुचि राम साहनी
RUCHI RAM SAHNI

विवरणिका BROCHURE

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख	:	24 अक्टूबर, 2013
Date of Issue	:	24 October, 2013
मूल्यवर्ग	:	500 पै.
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	4.1 लाख*
Stamps Printed	:	0.41 million*
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक
Printer	:	India Security Press, Nashik

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक–टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

*एक लाख प्रस्तावक हेतु।
*0.1 million for the proponent.

मूल्य ₹ 5.00

RUCHI RAM SAHNI

Ruchi Ram Sahni, a well-known educationist, notable scientist, nationalist, social and religious reformer, was born on 5th April, 1863 at Dera Ismail Khan, now in Pakistan, to Karam Chand Sahni, a cloth merchant, and Gulab Devi.

Ruchi Ram Sahni was a brilliant student. He completed his matriculation from Government School, Lahore in 1881 and B.A. in 1884 in which he stood first in the University. He obtained his masters degree in Physics and Chemistry in December, 1885. Sahni visited Presidency College, Calcutta as a trainee meteorologist and guest student in 1885 where he interacted with the leading personalities of Bengal. He was impressed by Dr. Mahendra Lal Sircar and decided to emulate him to take science to the masses.

Ruchi Ram was the first Indian officer in the Indian Meteorological Department where he worked from 1885-87. He then moved to Lahore and became the first Indian science professor at Government College, Lahore where he served from 1887-1918. He published two research papers on radioactivity in 1915 and 1917 while working in the laboratory of Ernst Rutherford in Manchester where he interacted with Niels Bohr. He remained a member of the Punjab University Senate and Syndicate for a number of years.

Ruchi Ram was awarded the title Rai Sahib in 1909 which he returned in 1920 in support of the Khilafat Movement. In 1923, he was elected to the Punjab Legislative Council as a member of the Swaraj Party. He was elected fellow of the Indian Academy of Sciences in the very year of its establishment in 1934. He served as a trustee of 'The Tribune' from 1918 till his death.

Ruchi Ram was a great advocate of science education in one's mother tongue and made concerted efforts to propagate science in regional languages. A great advocate of employment oriented technical education, he played an important role in the establishment of the Victoria Diamond Jubilee Technical Institute in Lahore in 1897.

Ruchi Ram adhered to the principles of Brahmo Samaj and held all religions in high esteem. He spoke out in favour of widow re-marriage and was a strong supporter of education of girls.

Ruchi Ram Sahni strove hard to apply his intellect, knowledge, analytical skills and organizational abilities for the benefit of his countrymen. He was a crusader for popularizing science and inculcating a scientific temper at the grass-root level. An open minded and liberal thinker, Ruchi Ram Sahni actively participated in socio-cultural and intellectual exploration of east-west encounter. His creative energy and brilliant intellect made him a truly legendary figure, who is as relevant today as he was in his own time.

Ruchi Ram Sahni breathed his last on 3rd June, 1948.

Department of Posts is happy to release a Commemorative Postage Stamp on Ruchi Ram Sahni.

Credits :

Text	:	Based on the material furnished by the proponent
Stamp/FDC/ Cancellation	:	Alka Sharma

रुचि राम साहनी

विख्यात शिक्षाविद्, ख्यातिलब्ध वैज्ञानिक, राष्ट्रवादी, समाज एवं धर्मसुधारक रुचि राम साहनी का जन्म करम चन्द साहनी, एक वस्त्र व्यापारी तथा गुलाब देवी के घर 5 अप्रैल, 1863 को डेरा इस्माईल खान, जो अब पाकिस्तान में है, में हुआ था।

रुचि राम साहनी एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे। उन्होंने अपनी मैट्रिक शिक्षा राजकीय विद्यालय, लाहौर से 1881 में तथा स्नातक की शिक्षा 1884 में पूरी की जिसमें वे विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान पर थे। उन्होंने दिसम्बर,1885 में भौतिकी तथा रसायन में परास्नातक की डिग्री हासिल की। साहनी 1885 में प्रशिक्षु मौसम विज्ञानी तथा अतिथि विद्यार्थी के रूप में प्रेसीडेंसी कालेज, कलकत्ता में दाखिल हुए जहां उन्होंने बंगाल की प्रमुख हस्तियों के साथ विचार–विमर्श किया। वे डॉ. महेंद्र लाल सरकार से प्रभावित थे तथा उन्होंने विज्ञान को जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए उनका अनुकरण करने का निर्णय लिया।

रुचि राम भारतीय मौसम विभाग के प्रथम भारतीय अधिकारी थे जहां उन्होंने 1885 से 1887 तक कार्य किया। तब उन्होंने लाहौर की तरफ रुख किया और गवर्नमेंट कालेज, लाहौर में वह विज्ञान के पहले भारतीय प्रोफेसर बनें जहां पर उन्होंने 1887 से 1918 तक अपनी सेवा दी। उन्होंने मान्चेस्टर में अर्नेस्ट रदरफोर्ड की प्रयोगशाला में काम करते हुए 1915 और 1917 में रेडियोधर्मिता पर दो शोध पत्रों का प्रकाशन किया, यहीं पर वे नील्स बोहर के संपर्क में भी आए। वे पंजाब विश्वविद्यालय के सीनेट एवं सिंडिकेट के कई वर्षों तक सदस्य रहे।

रुचि राम को 1909 में 'रायसाहिब' की पदवी से नवाजा गया था जिसे उन्होंने 1920 में खिलाफत आन्दोलन के समर्थन में लौटा दिया था। 1923 में वे स्वराज पार्टी के सदस्य के रूप में पंजाब विधान परिषद के सदस्य बने। वे इंडियन एकेडमी ऑफ साइंसेस की स्थापना के वर्ष, 1934 से ही इसके अधि–सदस्य चुने गए थे। उन्होंने 1918 से लेकर मृत्युपर्यन्त 'दि ट्रिब्यून' के ट्रस्टी के रूप में कार्य किया।

रुचि राम मातृभाषा में विज्ञान शिक्षा के प्रबल समर्थक थे तथा उन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञान का प्रसार करने के लिए संगठित प्रयास किया। रोजगारोन्मुखी तकनीकी शिक्षा के प्रबल समर्थक के रूप में उन्होंने 1897 में लाहौर में विक्टोरिया डायमंड जुबली टेक्नीकल इंस्टीट्यूट की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

रुचि राम ब्रह्म समाज के सिद्धान्तों के अनुयायी थे तथा उन्होंने सभी धर्मों को सम्मान दिया। वे विधवा पुनर्विवाह के पक्षधर थे तथा बालिकाओं की शिक्षा के प्रबल समर्थक थे।

रुचि राम साहनी ने अपनी बुद्धिमता, ज्ञान, विश्लेषण कौशल और संगठनात्मक योग्यताओं का उपयोग अपने देशवासियों के हित में किया। वे बुनियादी स्तर पर वैज्ञानिक सोच विकसित करने तथा विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए एक मुहिम के साथ कार्य करते रहे। खुली विचारधारा तथा उदारवादी चिंतक के रूप में रुचि राम साहनी ने पूर्व से पश्चिम तक में सामाजिक–सांस्कृतिक एवं बौद्धिक चिन्तन में सक्रिय भागीदारी निभाई। उनकी रचनात्मक ऊर्जा तथा कुशाग्र बौद्धिकता ने उन्हें एक ऐसी शख्सियत बना दिया जो आज उतना ही प्रासंगिक है जितना कि वह अपने समय में था।

रुचि राम साहनी का 3 जून, 1948 को निधन हो गया।

डाक विभाग रुचि राम साहनी पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :–

विषय–वस्तु	:	प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विरूपण	:	अलका शर्मा